# सामवेद संहिता

## (सरल हिन्दी भावार्थ सहित)

सम्पादक :

वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

भगवती देवी शर्मा

Scanned with CamScanner

**१४५९. प्रभङ्गी शूरो मघवा तुवीमघः सम्मिश्लो वीर्याय कम्।**
**उभा ते बाहू वृषणा शतक्रतो नि या वज्रं मिमिक्षतुः ॥७॥**

हे सामर्थ्यवान् इन्द्रदेव ! आप अपने पराक्रम से शत्रुओं की सामर्थ्य को चूर-चूर करने वाले हैं। आप सब में व्यापक और ऐश्वर्यवान् हैं। हे शतकर्मा इन्द्रदेव ! आपकी दोनों भुजाएँ जो वज्र को धारण करती हैं, विशिष्ट सामर्थ्य से युक्त हैं ॥७॥

**॥इति तृतीयः खण्डः॥**

* *

## ॥चतुर्थः खण्डः॥

**१४६०. जनीयन्तो न्वग्रवः पुत्रीयन्तः सुदानवः। सरस्वन्तं हवामहे ॥१॥**

स्त्री-पुत्र आदि की कामना करते हुए, यज्ञ-दानादि श्रेष्ठ कर्मों में अग्रणी हम याजकगण माँ सरस्वती का आवाहन करते हैं ॥१॥

**१४६१. उत नः प्रिया प्रियासु सप्तस्वसा सुजुष्टा। सरस्वती स्तोम्या भूत् ॥२॥**

परम प्रिय गायत्री आदि सातों छन्द और गंगा आदि सरिताएँ जिन देवी सरस्वती की बहिनें हैं, वे देवी सरस्वती हमारे लिए स्तुत्य हैं ॥२॥

**१४६२. तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् ॥३॥**

जो हमारी बुद्धियों को सन्मार्ग की ओर प्रेरित करते हैं, उन सविता देवता के वरण करने योग्य तेज को हम धारण करते हैं ॥३॥

**१४६३. सोमानां स्वरणं कृणुहि ब्रह्मणस्पते। कक्षीवन्तं य औशिजः ॥४॥**

हे ब्रह्मणस्पते ! (ज्ञानपते !) सोमाभिषव करने वाले हमें, उसी प्रकार यशस्वी और ज्ञान-सम्पन्न बनाएँ, जिस प्रकार (पूर्वकाल में) उशिज पुत्र कक्षीवान् को बनाया था ॥४॥

**१४६४. अग्न आयूंषि पवस आ सुवोर्जमिषं च नः। आरे बाधस्व दुच्छुनाम् ॥५॥**

हे अग्निदेव ! विभिन्न प्रकार के पोषक तत्त्वों के साथ आप हमें बल और दीर्घायुष्य प्रदान करें। दुष्टों को हमारे पास से दूर करें ॥५॥

**१४६५. ता नः शक्तं पार्थिवस्य महो रायो दिव्यस्य। महि वां क्षत्रं देवेषु ॥६॥**

देवों में प्रशंसनीय, क्षात्र बल से सम्पन्न हे मित्र वरुण देव ! आप हमें धरती और आकाश का समस्त वैभव प्रदान करें ॥६॥

**१४६६. ऋतमृतेन सपन्तेषिरं दक्षमाशाते। अद्रुहा देवौ वर्धेते ॥७॥**

सत्य से सत्य का पालन करने वाले अभीष्ट बल को प्राप्त करते हैं। द्रोह न करने वाले मित्र और वरुण देव अपनी सामर्थ्य से वृद्धि पाते हैं ॥७॥

**१४६७. वृष्टिद्यावा रीत्यापेषस्पती दानुमत्याः। बृहन्तं गर्तमाशाते ॥८॥**

वर्षा के लिए जिनकी वंदना की जाती है, नियमानुसार सब कुछ प्राप्त करने वाले, दान की प्रवृत्ति वाले, अन्नों के अधिपति वे मित्र और वरुण देव श्रेष्ठ स्थान में प्रतिष्ठित हैं ॥८॥

Scanned with CamScanner